राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 1] बारहवीं विधान सभा के पहले सत्र का दूसरा दिवस [संख्या : 2

शुक्रवार,

16 जनवरी, 2004

(राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई)

(श्री गंगाराम चौधरी, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष : सचिव, विधान सभा।

श्री सचिव (विधान सभा) : माननीय सदस्य, श्री प्रद्युम्न सिंह, (राजाखेड़ा)।

(अनुपस्थित)

दलीय स्थिति

इण्डियन नेशनल कांग्रेस पार्टी को प्रतिपक्ष

डा. बुलाकीदास कल्ला को नेता प्रतिपक्ष के रूप में मान्यता

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि राजस्थान विधान सभा के इण्डियन नेशनल कांग्रेस दल की बैठक में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव के अनुसार डा. बुलाकीदास कल्ला, विधायक को उक्त विधायक दल का नेता चुना गया है।

श्री महावीर प्रसाद जैन : कल्ला साहब, बधाई हो।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : बधाई हो।

अनेक माननीय सदस्य : बधाई हो, बधाई हो।

श्री अध्यक्ष : मुझे माननीय सदस्यों को यह भी सूचित करना है कि राजस्थान विधान सभा में इण्डियन नेशनल कांग्रेस पार्टी को प्रतिपक्ष दल के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गयी है तथा पार्टी के नेता डा. बुलाकीदास कल्ला को प्रतिपक्ष का नेता मान लिया गया है।

अध्यक्ष का निर्वाचन

श्रीमती सुमित्रा सिंह का अध्यक्ष पद पर निर्वाचन

श्री अध्यक्ष : श्रीमती वसुन्धरा राजे।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूं, ''श्रीमती सुमित्रा सिंह, सदस्य, विधान सभा, (विभाजन संख्या 180) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।''

श्री अध्यक्ष : डा. बुलाकीदास कल्ला।

डा. बुलाकीदास कल्ला (नेता, प्रतिपक्ष) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव श्रीमती वसुन्धरा राजे, विभाजन संख्या 155 ने प्रस्तुत किया है, जिसका अनुमोदन डा. बुलाकीदास कल्ला, विभाजन संख्या 100 ने किया है, को स्वीकार किया जाये।

(स्वीकृत)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

श्रीमती सुमित्रा सिंह को अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया।

(श्रीमती वसुन्धरा राजे, मुख्य मंत्री, डा. बुलाकीदास कल्ला, नेता, प्रतिपक्ष, श्री घनश्याम तिवाड़ी, शिक्षा मंत्री एवं श्री अमराराम (धोद) ने माननीय श्रीमती सुमित्रा सिंह को अध्यक्ष के आसन तक ले जाकर बिठाया।

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

अनेक माननीय सदस्य : बधाइयां, बधाइयां। जय श्री राम, हो गया काम।

बधाई एवं आभार

श्रीमती सुमित्रा सिंह के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बधाई

श्री घनश्याम तिवाड़ी (शिक्षा मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं शिक्षा मंत्री होने के नाते एक वाक्य कहना चाहूंगा कि राजस्थान विधान सभा के इतिहास

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

में आप इस आसन पर आरूढ़ हैं जो सबसे वरिष्ठ हैं और आपको बधाई देने वाली भी हमारे जो सदन की नेता हैं, वह भी महिला हैं, और आप भी महिला हैं। शायद यह इतिहास बना है और इसके लिये माननीय मुख्य मंत्रीजी आपको बधाई दे रही हैं।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री) : खुश लग रहे हैं, सब खुश लग रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके अध्यक्ष निर्वाचित होने के उपलक्ष्य में आपको हार्दिक बधाई देना चाहूंगी। राजस्थान विधान सभी की यह परम्परा रही है कि अध्यक्ष का चुनाव सर्वसम्मति से हो। आप नवीं बार इस विधान सभा में निर्वाचित होकर आई हैं और आपको संसदीय पद्धति का बहुत ही गहन अनुभव है। आप 1967 से 1971 तक और तत्पश्चात् 1990 में राज्य मंत्रिमण्डल की सदस्य रही हैं। आपने सदन में सद्परम्पराओं का निर्वहन किया है। माननीय अध्यक्ष महोदया, अध्यक्ष का आसन विक्रमादित्य के सिंहासन के समान है और अभी तक जितने भी अध्यक्ष इस सदन में निर्वाचित हुए हैं, उन्होंने उच्च परम्पराओं का निर्वहन करते हुए सदन में निष्पक्षता का व्यवहार किया है। मैं स्वयं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से एवं समस्त सदन की ओर से आपको आश्वस्त करती हूं कि सदन के संचालन में हम सब आपका पूर्ण सहयोग करेंगे ताकि सदन का कार्य गरिमापूर्ण ढंग से सम्पन्न हो। मैं पुनः आपके प्रति शुभकामनाएं प्रकट करती हूं कि सदन की उच्च परम्पराओं को बनाये रखने में हमारा मार्गदर्शन करती रहें।

डा. बुलाकीदास कल्ला (नेता, प्रतिपक्ष) : अध्यक्ष महोदयाजी, मैं सबसे पहले अपनी ओर से एवं अपने दल की ओर से आपको सर्वसम्मति से विधान सभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने पर बधाई देता हूं। आपको पक्ष और विपक्ष दोनों का अनुभव रहा है और यह एक बहुत सुखद संयोग है कि हमारे पूर्व विधान सभाध्यक्ष, श्री परसरामजी मदेरणा नौ दफा जीतकर इस सदन के अध्यक्ष पद पर आसीन हुए, आपने भी उस इतिहास को दोहराया है कि आप भी नवीं बार चुनकर इस पद पर आसीन हुई हैं। इस पद पर जितना अनुभवी व्यक्ति होता है उतना ही सदन को लाभ मिलता है। आपको कमेटियों से लेकर, मंत्री पद से लेकर और विधान सभा का बहुत लम्बा अनुभव प्राप्त है। इस

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

आधार पर मुझे विश्वास है कि आप जहां सत्ता पक्ष को तो पूरी सत्ता मिली हुई है, उनको एक्ट करना है और विपक्ष के रूप में हम लोग जो भी यहां पर मुद्दे उठायेंगे, उन मुद्दों को संरक्षण और प्रोटक्शन देने का काम आपका है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम सदन की गरिमा को बनाये रखेंगे। लेकिन विपक्ष द्वारा जो भी मुद्दे उठाये जायेंगे उसमें लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति आपका जो कर्तव्य है, उसमें, मुझे पूरा विश्वास है कि आप हमको प्रोटेक्ट करेंगी।

मैं इस अवसर पर यह भी कहना चाहूंगा आपको कि न केवल राजस्थान का बल्कि आपने मंत्री के रूप में, कमेटियों की अध्यक्ष के रूप में पूरे हिन्दुस्तान का दौरा किया है। हाउस आफ कामन्स का भी आपको अनुभव है। मैंने स्वयं ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में जाकर देखा है कि वहां पर क्वीन का एड्रेस होता है और क्वीन का एड्रेस होने के बाद वहां पर एक घण्टे के लिये पार्लियामेंट एडजोर्न हो जाती है और उसके बाद उसी दिन बहसं होती है और लीडर आफ अपोजिशन और सदन के नेता दोनों बोलते हैं। कुछ इम्पोर्टेंट, जो सदन के सदस्य हैं, वह भी बोलते हैं। तो हमारी विधान सभा की जो परिपाटी और परम्पराएं चल रही हैं, उनमें भी आप कुछ तब्दीली लाने की, मैं समझता हूं, कोशिश करेंगी तो निश्चित रूप से हम यहां पर काफी काम कर पाएंगे।

आप देख रही हैं कि सदन की गरिमा तब बढ़ती है जब लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना सही ढंग से होती है। आज का युग इन्फोरमेशन टैक्नोलाजी का और इन्फोरमेंशन का युग है। स्टार क्वेश्चन की एक सीमा है मैं मानता हूं कि इसमें विलम्ब लगता है, सदन में समय पर सूचनाएं देना कठिन है लेकिन अनस्टार क्वेश्चन के लिए कोई सीमाएं नहीं होनी चाहिए। एक तरफ तो हम आम आदमी को सूचना का अधिकार दे रहे हैं और जो दो-दो तीन-तीन लाख आदमियों के प्रतिनिधि हैं, उनके लिए अनस्टार क्वेश्चन की सीमा करना, यह उचित नहीं है। मैं समझता हूं इनके ऊपर आप विधान सभा अध्यक्ष के रूप में विचार करके निर्णय करेंगी ताकि सदन में इन सब बातों के बारे में बहुत अच्छी व्यवस्थाएं बैठ सकें।

हमारे इस सदन में कई माननीय सदस्य नये चुन कर आये हैं, विधान सभा की प्रक्रियाओं के बारे में, कार्य संचालन सम्बन्धी नियमों के बारे में आधी-अधूरी जानकारी रखते हैं। मैं चाहता हूं कि आप विधान सभा की तरफ

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

से एक ट्रेनिंग कैम्प लगाएं जिसमें पक्ष और विपक्ष सभी प्रकार के माननीय सदस्य भाग लें और उसके बाद उनको संसदीय परम्पराओं के बारे में नालेज बढ़े।

आज कम्प्यूटर लिट्रेसी सबके लिए आवश्यक है लेकिन कम्प्यूटर का, इन्टरनेट का ज्ञान माननीय सदस्यों को बहुत कम है। हम चाहते हैं कि सभी लोग, जिसमें मंत्रीगण भी सम्मिलित हों, सत्ता और विपक्ष के सभी माननीय सदस्य सम्मिलित हों, उनको कम्प्यूटर लिट्रेसी का दस दिन, पन्द्रह दिन का प्रोग्राम दिलवाया जाए ताकि अधिकतम जानकारी माननीय सदस्यों को और सदन को मिलती रहे।

महिला सशक्तीकरण के बारे में आपने इस सदन की महत्वपूर्ण सदस्या के रूप में कई बार बातें उठायी हैं। जनसंख्या की समस्या एक बहुत बड़ी समस्या है जिसके बारे में इस सदन ने सर्वदलीय कांफ्रेंस वगैरह आयोजित की हैं, इन सब कार्यक्रमों को भी वक्तन-वक्तन हम को करना चाहिए।

कामनवैल्थ पार्लियामेंट्री की मीटिंग्स होती हैं, उनमें आप अध्यक्ष के रूप में बराबर भाग लेती हैं और सभी माननीय सदस्य उसके सदस्य हैं। हम को उस प्लेटफार्म को भी मजबूत करने की आवश्यकता है ताकि हर बार पक्ष और विपक्ष के कम से कम चार और पांच माननीय सदस्य विदेशों में जा सकें, उनका एक्सपोजर बढ़े और उनको पार्लियामेंटेरियल के रूप में वे इफैक्टिव साबित हो सकें। इसके लिए हम को आगे-आगे काम करना चाहिए।

इस अवसर पर मैं पुनः अपनी ओर से और अपने दल की ओर से आपको बधाई देता हूं और यह उम्मीद करता हूं कि लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिस्थापित करने के लिए और प्रजातांत्रिक ढांचे को मजबूत करने के लिए आपकी अध्यक्ष के रूप में भूमिका बहुत उपयोगी साबित होगी और यह सदन नये कीर्तिमान स्थापित करेगा। आपको बहुत-बहुत बधाई।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू) : अध्यक्ष महोदय, अमरारामजी बोलेंगे।

श्री अरुण सिंह (डीग) : माननीय अध्यक्षा, हम भी आपको अपनी तरफ से शुभकामनाएं देना चाहते हैं। (व्यवधान) हां।

एक माननीय सदस्य : आपके दल से हमारा दल बड़ा है।

श्री अध्यक्ष : ठीक है, लेकिन एक-एक कर के बोलिये। धोद से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, बधाई देने दें।

श्री अमराराम (धोद) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके सर्वसम्मति से इस सदन के सर्वोच्च पद के लिए चुने जाने के लिए बधाई देता हूं।

राजस्थान के इस सर्वोच्च सदन में आप वरिष्ठतम सदस्या हैं जो इस आसन पर सर्वसम्मति से चुनी गयी हैं। निश्चित रूप से राजस्थान की विधान सभा के इस हाउस का सबसे बड़ा सम्मान और गरिमा पूरे देश में जानी जाती है, वह निश्चित रूप से आने वाले समय में इस हाउस का सदुपयोग होगा और नियम और कायदे से चलाने में आपका बहुत बड़ा योगदान नये सदस्यों को सिखाने का होगा। सबसे बड़ा काम है इस सदन का उपयोग। राजस्थान की करोड़ों की जनता का जो हक और अधिकार है, सत्तापक्ष की ओर से जो योजनाओं के माध्यम से अपने पक्ष को रखना है और विपक्ष की ओर से जनता के उन हकों और हितों के लिए इस सदन का सबसे बड़ा उपयोग हो। व्यर्थ की बातों में नहीं जाए। आपके इस आसन पर आने पर मैं उम्मीद करता हूं कि राजस्थान की उस करोड़ों दलित और दमित जनता के हितों के लिए सबसे ज्यादा समय इस सदन का उपयोग होगा। इसी आशा और विश्वास के साथ पुनः आपको धन्यवाद देते हुए मेरी बात समाप्त करता हूं।

श्री अरुण सिंह (डीग) : माननीय अध्यक्षा, आप सर्वसम्मति से इस पद पर आए।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, अध्यक्ष कामन जेन्डर है, अध्यक्षा कहने की आवश्यकता नहीं है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : शानदार रूलिंग।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : पहले भी अध्यक्ष पद के निर्णय हो चुके हैं, सदन के नेता के लिए भी और आपके लिए भी, दोनों के लिए जेन्डर का कोई भेद नहीं है इसलिए आपको भी सदन का नेता कह सकते हैं और आपको माननीय अध्यक्ष कह सकते हैं। कल्ला साहब, आपको थोड़ी दिक्कत आयेगी।

श्री अरुण सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, हम जरूर अल्पसंख्यक हैं पर अपने दल की ओर से आपको पूरा काआपरेशन देंगे और उम्मीद करते हैं कि हमारे को भी आप मौका देंगे, इस हाउस में प्रोटेक्शन देंगे। आपको शुभकामनाएं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के लोकतांत्रिक इतिहास में आज एक गौरवमय पन्ना जुड़ा है। राजस्थान की विधान सभा बनने के बाद आप पहली विदुषी महिला हैं जिन्होंने इस गौरवपूर्ण आसन को सुशोभित किया है।

अध्यक्ष महोदय, आपके आसन पर विराजने से आपका सम्मान तो हुआ ही है पर साथ ही यह आसन भी सुशोभित हुआ है आप जैसी विदुषी महिला को पाकर। आप इस राजस्थान की विधान सभा में साक्षी रही हैं, लगभग 40-50 साल तक अलग-अलग दायित्व निभाये हैं, आपको अनुभव है। जिस तरह का राजनीतिक जीवन जीया है, उस जीवन से और आपके अनुभव से हम सभी लोगों को प्रेरणा मिलेगी। आपके मार्गदर्शन में राजस्थान की विधान सभा अपने गरिमापूर्ण इतिहास को और ही ऊंचाइयों पर ले जायेंगी।

अध्यक्ष महोदय, आज के पश्चात् आप ना तो पक्ष की सदस्या हैं, ना ही विपक्ष की सदस्य हैं, परन्तु अध्यक्ष के रूप में आप हमारे संरक्षक हैं। आपके संरक्षण में हम सब लोग अपनी-अपनी बात राजस्थान के इस सर्वोच्च सदन में कहेंगे। हमको आपका मार्गदर्शन मिलेगा और निश्चित तौर पर आप इस गौरवशाली राजस्थान विधान सभा की परम्परा को. इसके इतिहास को और गौरवान्वित करेंगी। मेरी ढेरों सारी शुभकामनाएं।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : अध्यक्ष महोदय, आज बड़े ही हर्ष का विषय है कि एक किसान की बेटी को अध्यक्ष पद पर सुशोभित किया है। इसके लिए हम सब अपने आपको बहुत ही गौरवान्वित समझते हैं। अध्यक्ष महोदय, हम यह भी आशा रखते हैं कि आसन हमारी, निर्दलीयों की रखवाली करेगा। हम उम्मीद रखते हैं कि जब-जब भी सदन में आप...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर) : अध्यक्ष जी भी पहले निर्दलीय थे।

श्री रामप्रताप कासनिया : वैसे हमारा दल कोई छोटा नहीं है, संख्या काफी है। अध्यक्ष महोदय, हम यही उम्मीद करते हैं कि आप निष्पक्ष भावना से इस राजस्थान की विधान सभा का जो इतिहास रहा है, उसको और भी सुशोभित करेंगी और पक्ष और विपक्ष सब को बराबर मौका देंगे।

हम निर्दलीय पुनः आपका आभार प्रकट करते हैं, आपको धन्यवाद देते हैं सभी की ओर से। सभी की ओर से, और क्या करें। आप अलग हो तो अलग राय प्रकट कर देना। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री फतेह सिंह (कुशलगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आपके इस आसन पर विराजमान होने पर, अध्यक्ष पद मिलने पर मैं जनता दल की ओर से आपको धन्यवाद देता हू और उम्मीद करता हूं कि इस सदन में आप पक्ष और विपक्ष की बात को सुनेंगे और ईमानदारी से इस पद को निभायेंगे। (व्यवधान) नहीं, वह तो सीट तय नहीं है इसलिए हम तो वैसे ही बैठ गये। तो मैं उम्मीद करूंगा, जनता दल एन.डी.ए. में शामिल है और हम चुनाव भी उस रूप में लड़े हैं। तो मै यह आशा करता हूं जनता दल के जो भी हमारे सदस्य हैं वह सब उम्मीद करते हैं कि आप हमारी रक्षा करेंगी, इस क्षेत्र की, इस प्रदेश की जनता के हित में, गरीबों के हित में, किसानों के हित में जो भी बात सामने आयेगी उसका निष्पक्ष रूप से निर्णय करेंगे, फैसला करेंगे, उनके हित में काम करेंगे। मैं आपको पुनः धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री हरलाल सिंह खर्रा (श्रीमाधोपुर) : माननीय अध्यक्षजी, बारहवीं विधान सभा में राजस्थान ने एक इतिहास रचा है, इतिहास में नया पन्ना जोड़ा है। आपको अध्यक्ष चुनकर, मैं स्वतंत्र सदस्यों की तरफ से आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं और मै आशा करता हूं कि आप निष्पक्ष रूप से आसन का संचालन कर इस विधान सभा में एक नया इतिहास रचेंगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको पुनः हृदय से धन्यवाद देता हूं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण।

श्री खुशवीर सिंह (खारची) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रथम बार चुनकर आया हूं। मैं आपको हार्दिक बधाई देना चाहूंगा। हमें विश्वास कि इस बार जैसा कि मैंने सुना है, अभी सदन में कि प्रथम बार माननीय अध्यक्ष महोदय और माननीय मुख्य मंत्री महोदय दोनों ही महिलाएं हैं। तो हमें विश्वास है कि प्रदेश में महिलाओं के हितों की रक्षा निश्चित रूप से होगी। (व्यवधान) माननीय सदस्य, संसद में हमारी प्रधान मंत्री महिला बनेंगी, निश्चित रूप से। मैं आपको धन्यवाद देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद इस आशा के साथ कि माहिलाओं के हितों की रक्षा होगी।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर) : रक्षा करेंगे हम चिन्ता मत करो आप।

आदरणीय सोनियाजी प्रधान मंत्री, होगी।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आपस में बातचीत नहीं । आडर्र-आडर्र ।

श्री रामनारायण चौधरी (मण्डावा) : अध्यक्ष जी, मैं आपकी अनुमति से इस सीट से बोलने की...

श्री अध्यक्ष : आपके नेता तो बोल चुके न।

श्री रामनारायण चौधरी : मैं भी बोलूंगा।

श्री अध्यक्ष : आप भी बोलिए। बोलिए।

श्री रामनारायण चौधरी : क्योंकि मेरे जिले को, राजस्थान को...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : बीच में नहीं बोलें। माननीय सदस्य, बीच में अव्यवस्था नहीं डालें।

श्री रामनारायण चौधरी : अध्यक्ष जी, मुझे यह कहते हुए फख्र है कि राजस्थान और राजस्थान की विधान का यह सौभाग्य है कि आप झुंझुनूं जिले के उस स्वतंत्रता सेनानी के परिवार की सुपुत्री हैं जो कि राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रही हैं जयपुर रियासत में झुंझुनूं जिले का स्वाधीनता आन्दोलन का महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक इतिहास रहा है और इस इतिहास में आपके स्वर्गीय पिता चौधरी राजूरामजी का भी एक चैप्टर लिखा हुआ है। आज उनकी महान सुपुत्री इस सभा को, इस सदन को सुशोभित कर रही हैं। मैं आपको इस मौके पर मुबारकबाद देता हूं।

(श्री रामनारायण चौधरी)

यह राजस्थान का सौभाग्य है कि आपको यह पद मिला है और यह भी आपका ही सौभाग्य है कि आप सर्वसम्मति से निर्वाचित हुई। मुझे अनुभव है कि अब तक जितने भी अध्यक्ष हुए हैं, प्रतिपक्ष ने कहीं न कहीं कुछ कहा है लेकिन आपका सर्वसम्मति से प्रस्ताव पक्ष और प्रतिपक्ष की तरफ से आया। जैसा कि मेरे नेता ने कहा, आपकी अध्यक्षता में कुछ नयी परम्पराएं कायम हुई। मान्यवर, ब्रिटिश पार्लियामेंट की परम्परा रही है, वहां का यह कंवेंशन है कि जूनियर को स्पीकर बनाते हैं लेकिन भारत की परम्परा यह रही है कि अनुभवी लोगों को अध्यक्ष पद मिला है। आप अध्यक्ष पद से उन परम्पराओं को कायम करेंगी जो देश में मावलंकरजी ने स्थापित की हैं और उसके बाद से बड़े-बड़े हमारे केन्द्रीय नेताओं और प्रदेश की हमारी विधान सभा ने भी परम्पराएं कायम की हैं।

मान्यवर, आपने देखा होगा कि हमारे इस विधान सभा में तारांकित प्रश्न एक या दो ही लिये जाते रहे हैं। इस परम्परा को हमारे ही यहां के पक्ष व प्रतिपक्ष के नेता हमारे उप राष्ट्रपति महोदय ने देश की राज्य सभा में तोड़ा है और शत प्रतिशत प्रश्नों के उत्तर दिलवाये हैं। इस परम्परा को, जो वहां कायम हुई है, जैसाकि कल्लाजी ने कहा है, मेरे नेता ने कहा है, उस परम्परा को आप निभायेंगी और चूंकि स्टार् क्वेश्चंस हैं वे तमाम हाथों हाथ इलैक्ट्रोनिक मीडिया, और माननीय सदस्यों की यह भावनाएं हैं, देश और प्रदेशों के सदनों के जरिये सामने आती हैं, तो तारांकित प्रश्नों की जो आज गति रही है, उस गति में अत्यधिक सुधार आयेगा, ऐसा हमें विश्वास है।

इन्हीं शब्दों के साथ पुनः, आपको यह भारी दायित्वपूर्ण पद मिला है, इससे पूरे राजस्थान का गौरव बढ़ा है, झुंझुनूं जिले का बढ़ा है, आपके और मेरे विधान सभा क्षेत्र का भी बढ़ा है, मेरे क्षेत्र और जिले की ओर से मैं आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा) : अध्यक्ष महोदय, मैं पहली बार चुन कर आया हूं और किसी भी दल से नहीं हूं। एक मिनट मेरी बात को सुन लिया जाए। मैं दोनों दलों के नेताओं से, सदन की नेता से और प्रतिपक्ष के नेता से उम्मीद करता हूं कि आपसी पार्टियों की राजनीति में, जैसा कि अभी मेरे को लगा, सदन की महिला नेता की बात आयी, सदन की महिला की बात आयी, दिल्ली की महिला की यहां पर बात आने लगी, संकेत में बात की जाने लगी तो हम यह चाहते हैं कि पहली बार जीत कर आये हैं...

श्री अध्यक्ष : आप कहना क्या चाहते हैं ?

डा. सुरेश चौधरी : अध्यक्ष महोदय, हम मार्गदर्शन चाहते हैं। (व्यवधान) महिलाओं से नाराजगी नहीं है। हम यह चाहते हैं कि आपसी राजनीति के चक्कर में जो रचनात्मक बहस हो सकती है, उसको दरकिनार नहीं किया जाए। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : लेकिन आप क्या बोलना चाहते हैं ?

डा. सुरेश चौधरी : हम यही चाहते हैं कि दलों की राजनीति मे जनहित की बातों को दरकिनार नहीं किया जायेगा । धन्यवाद।

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना) : मैं भी अपनी ओर से बधाई दे दूं। ...(व्यवधान) धन्यवाद।

आभार प्रदर्शन

श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष द्वारा आभार प्रदर्शन

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, इस सदन के सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों ने ही सर्वसम्मति से मेरे ऊपर यह गुरूतर भार डाला है। जो कर्तव्य मुझे यहां पर आपने सम्भलाया है उसके लिए तो मैं आभारी हूं, आपका धन्यवाद करती हूं लेकिन आपसे सहयोग भी चाहती हूं। माननीय सदस्यगण, वैसे आप सब जानते हैं कि भारत के संविधान की आत्मा लोकतंत्र है। इसी लोकतंत्र की बदौलत, इसी लोकतंत्र के जरिये आप सब लोग इस प्रदेश की सबसे ऊंची लोकतंत्र की जो संस्था है, जो फोरम है यह सदन, उस पर चुन कर आये हैं। उसके लिए मैं आप सबको अपनी ओर से बधाई भी देती हूं, आपको नव वर्ष की शुभकामना भी देती हूं।

माननीय सदस्यगण, सरकारों का परिवर्तन लोकतंत्र की एक सहज प्रक्रिया है और इसे सहज रूप में लिया भी जाना चाहिए। पांच करोड़ से अधिक लोगों की आशाओं, विश्वास और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है हमारा यह सदन, और इसलिए इस सदन की गरिमा भी है, इस सदन का महत्व भी है उसी महत्व को, उसी गरिमा को हमें बनाये रखा है। मै सोचती हूं और आपसे अपेक्षा करती हूं कि इस गरिमा को आप बनाये रखेंगे ताकि ठीक तरीके से यह

(श्री अध्यक्ष)

सदन चल सके। सत्तापक्ष का विधायी कार्य भी ठीक तरह से सम्पन्न हो सके और जिसके कारण समस्याओं को उठाते हुए प्रतिपक्ष भी जो बात कहना चाहे उसे पूरा अवसर इस बात के लिए मिले, ऐसी कोशिश करूंगी। निष्पक्ष तौर से इस आसन पर रहते हुए भी मैं आपना कार्य करूंगी।

माननीय सदस्यगण, यह सदन नियमों, प्रक्रियाओं, व्यवस्थाओं और परम्पराओं के आधार पर चलता है और यह आसन भी उससे बंधा हुआ है। इसलिए कई बार व्यवस्था बनाये रखने के लिए मुझे कुछ कठोर व्यवहार भी करना पड़े जो आपको अप्रिय लगे तो उसके लिए क्षमा तो चाहती हूं लेकिन व्यवस्था बनाये रखने के लिए ऐसा करना पड़ेगा, पड़ सकता है।

माननीय सदस्यगण, मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहूंगी कि हमें विरासत में गौरवमय अतीत मिला है। गौरवमय अतीत का मतलब मेरे कहने का यह है कि इसी सदन में सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष में कई कददावर नेता हमें प्राप्त हुए हैं जो बहुत अच्छे पार्लियामेंटेरियन भी कहलाये और जिन्होंने नई परम्पराओं को भी और इस सदन की गरिमा को भी बनाये रखा है और हमें उस गरिमा को बनाये रखने के लिए अपने कुछ चीजों के लिए अपने आपको व्यवस्था और परम्परा भी बनाने के लिए आपका व्यवहार, आपके तौर-तरीके शालीन होने चाहिए, आपकी भाषा संयत होनी चाहिए तभी वह गरिमा हम बनाये रख सकेंगे।

माननीय सदस्यगण, कई बार पिछले कई वर्षों से मैं लगातार देख रहीं हूं कि इस सदन में नियमों का पालन नहीं होता है। हम चाहे जैसी अव्यवस्था करके सदन की पांच करोड़ जनता को कई बार तो ऐसा सुनने को मिलता है उनसे कि लोग कहते हैं कि यह विधान सभा नहीं है। मैं उदाहरण के तौर पर बताना चाहूंगी कि यह जो वैल है इस वैल में से किसी को भी नहीं गुजरना चाहिए। और 1977 से पहले मैंने कभी भी किसी भी सदस्य को वैल में आते देखा नहीं था, लेकिन मैं अब देखती हूं कि सत्ता पक्ष से बात करने के लिए, मंत्रियों से बात करने के लिए इधर से उठ करके सदस्य वैल में से हो करके आते है सम्पर्क करने के लिए। इसी तरीके से जब अध्यक्ष पांव पर, आसन अपने पैरों पर हो तब मैंने देखा है सुखाडियाजी दस-दस मिनट तक दरवाजे के बाहर खड़े रहा करते थे क्योंकि जब आसन पांव पर हो तो न तो किसी को सदन छोड़ना चाहिए और न किसी को सदन में प्रवेश करना चाहिए। लेकिन मैं देख रही हूं पिछले सालों से कि लगातार इस नियम की अवहेलना हो रही है। मैं चाहूंगी कि नये आने वाले सदस्य हों, चाहे पुराने सदस्य हों, कुछ ऐसी बातें

(श्री अध्यक्ष)

हैं, आपको ''सदस्योपयोगी'' एक छोटी सी पुस्तिका मिली होगी उस पुस्तिका में आप क्या करें सदन में और क्या न करें, डूज एण्ड डोंट डूज, उस पुस्तिका को पढ़ना बड़ा आवश्यक है।

मोबाइल की घंटियां, मैं आपको कह रही हूं आज के बाद सदन में मुझे किसी की भी घंटी सुनाई नहीं देनी चाहिए। सदन में यदि आप मोबाइल लेकर आते हैं तो आप अपने मोबाइल को बंद करके रखिये और सदन से बाहर जाने के बाद आप उसे सुनिये, जिससे बात करनी हो करिये, लेकिन सदन में किसी का भी मोबाइल खुला नहीं होना चाहिए। यह सदन के नियमों के विपरीत है। (व्यवधान) आसन बोल रहा है और आप बीच में बोल रहे हैं। पहले दिन अव्यवस्था कर रहे हैं। आप देखिये, मैं इन बातों को कतई बरदाश्त नहीं करूंगी। मैंने आपसे बहुत नम्र शब्दों में कहा है । बहुत नम्र शब्दों में फिर दोहरा रही हूं कि नियमों का पालन कराने की मेरी जिम्मेदारी है। आपने यह कर्तव्य मुझे सौंपा है। आपने यह गुरुतर भार मुझे सौंपा हे तो मै चाहूंगी, क्योंकि मैं खुद नियमों से, यह आसन नियमों से बंधा हुआ है और नियमों से बंधे होने के कारण कुछ कठोर कार्यवाही करनी पड़ेगी इसलिये पहले से क्षमा चाह लेती हूं लेकिन पहले की तरह से मैं अव्यवस्था नहीं फैलने दूंगी, यह मैं आपसे कहती हूं।

माननीय सदस्यगण, मैं अन्त में आप सबका सहयोग चाहती हूं और चाहती हूं कि बहुत गरिमामय तरीके से हम संसदीय नियमों का पालन करें और सौहार्दपूर्ण तरीके से इस राजस्थान के विकास के लिए, इस राजस्थान की बेहतरी के लिए प्रतिपक्ष जिन जन समस्याओं को उठाये उन समस्याओं को ठीक तरीके से उठा करके उनका समाधान भी सत्ता पक्ष करे। यह हमारे इस सदन का व्यवहार होना चाहिए।

इसलिए अपने इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सबका मेरी ओर से बहुत-बहुत अभिवादन करती हूं, आप सबको बहुत-बहुत मुबारकबाद देती हूं आपकी जीत के लिए और चुनने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं।

सदन की कार्यवाही सोमवार, 19 तारीख की प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही 11.35 बजे सोमवार, दिनांक 19.1.2004 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)
